शिल्पाचार्य विश्वकर्मा

हजारों वर्षों से हम विश्कर्मा जयंति मनाते आ रहे हैं। शास्त्रों में गायन है कि विश्वकर्मा जी शिल्पार्चा वा देवशिल्पी थे। उनहोंने स्वर्ग का निर्माण किया। देवात्माओं के लिए सर्व साधन-सम्पन्न महलों की व्यवस्था की जो अतुलनीय थे। विश्वकर्मा के जीवन में जरूर कुछ विशेषतायें रही होगी, जो स्वयं ब्रह्माक ने नयी सृष्टि-स्वर्ग का निर्माण का कार्य उनको दिया। विश्वकर्मा ने सर्व कलाओं रूपी श्रेष्ठ शिल्प द्वारा नव विश्व के निर्माण का कार्य किया जिस कारण वे विश्वकर्मा कहलाये।

आज संचार में स्थापत्य कला, मूर्तिकला, वास्तुकला या कारीगरी से सम्बन्धित किसी भी कला में निपुण व्यक्ति अपने को विश्वकर्मा का वंशज वा उत्तराधिकारी समझता है। लेकिन विश्वकर्मा समान श्रेष्ठ कर्म नहीं कर पाता क्योंकि वह उनके जीवन की विशेषताओं से अनजान है। यदि वह अपने जीवन में उनकी विशेषताओं को अपनाएगा तो वह भी महान निर्माण करार्य कर सकेगा और कला के माध्यम से स्वयं को महान बनाएगा। कहते है कि भगवान को संकल्प उठा नया विश्व बनाने का औश्र ब्रह्मा अपने पुत्र विश्वकर्मा को परमात्मा के संकल्प को साकार रूप देने का कार्य दिया जो उन्होंने पूरा किया। विश्वकर्मा के चित्र को देखने से उनका चरित्र हमारे सामने प्रत्यक्ष हो जाता है। जैसे किसी के हाथ में कुल्हाड़ी देख हम जान जाते है कि यह लकड़हारा है, रंग का तुलिका देखने से पता चल जाता है कि यह चित्रकार है। उसी प्रकार विश्वकर्मा के हाथ में जो अलंकार दिये गये है उनसे हम उनके चरित्र को जान सकते हैं। उनको चारों हाथों में क्रमश: रस्सी, माप पट्टी शास्त और कमण्डल या माला दिखाते हैं। उनके पास सदा हंस दिखाया गया है। इन सभी अलंकारों का आध्यात्मिक रहस्य है।

हम देखते है कि स्थापत्य कला वा भवन-निर्माण में रस्सी का बहुत महत्व है। भवन निर्माण के पूर्व स्तम्भ बनाने के लिए गड्ढे आदि के चिन्ह बनाने में, दिवार को सीधा बनाने या इंटों को लाईन में रखने के लिए रस्सी का प्रयोग होता है। दूसरा अलंकार है-माप पट्टी। चाहे सोनार हो या लोहार हो, सभी प्रकार के कारीगर भी अपनी कला को सम्पन्न बनाने में माप-पट्टी का प्रयोग करते हैं। तीसरे हाथ में शास्त्र दिखाया गया है। जैसे बच्चों के हाथ में पुस्तक देखकर हम समझते हैं कि यह विद्यार्थी है। उसी प्रकार विश्वकर्मा के हाथ में शास्त्र दिखाने का भाव यही है कि न सिर्फ शिल्पकला में परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान में भी वे मास्टर थे।

यह ज्ञान उन्हें शिव परमात्मा ने पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से दिश। ब्रह्मा बाबा जानते थे कि जिसकी आध्यात्कि उन्नति नहीं होगी वह श्रेष्ठ दुनियां का निर्माण नहीं कर पायेगा और अपनी कला को श्रेष्ठ कार्य में नहीं लगा सकेगा। विश्वकर्मा ने ईश्वरीय ज्ञान का जीवन में विकास किया जिस कारण सभी देवों ने उन्हें देवशिल्पी का पद प्रदान किया।

चौथे हाथ में कमण्डल वा माला दिखायी गयी है। विश्वकर्मा किसकी माला जपते थे वे परमात्मा शिव को याद करते थे। कमण्डल का अर्थ है-बुद्धि उनकी इतनी स्वच्छ और शक्तिशाली थी कि उसमें सदा परमात्मा की याद समायी रहती थी। आज के भवन निर्माण कर्त्ता, कारीगरों से काम करवाने में सदा भारी रहते है लेकिन विश्वकर्मा जी सदा हल्के थे क्योंकि उनकी निर्मल बुद्धि में कर्म करते हुए भी परमात्मा की याद समायी रहती थी।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com